Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

फ़रवरी,मार्च/2024 ई

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Feb,Mar/2024

Date of Publication:10-02-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

21.01.2024 के गांधी हस्पताल सिकंदराबाद (तेलंगाना) के मरीज़ों के लिए फ़लों को पैकेट बनाते हुए श्री ख़ालिद अहमद अल्लादीन साहिब खाईद ईसार व ख़िदमते ख़ल्क़ मजलिस अंसारुल्लाह भारत ऐवम दीगर मेमब्रान।

21.01.2024 के गांधी सिकंदराबाद हस्पताल (तेलंगाना)में मरीज़ों में फ़ल तक़सीम करते हुए श्री शमीम अहमद साहिब ज़ईम अंसारुल्लाह ।

26-01-2024 को कोट्टापपराम्बु महिलाओं और बच्चों के हस्पताल में रक्त दान देते हुए स्टाफ़ और अराकीन अंसारुल्लाह कोज़ीकोड, वायनाड (केरला) के दृश्य ।

बِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)

डाक्टर अब्दुल माजिद

09915279005

मैनेजर

ताहिर अहमद बेग

Ph. +91 99152 23313

प्रेस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस

क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹

विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान - 143516

ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 22 फरवरी/मार्च 2024 **Issue -02**

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय : हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी पश्चिम में इस्लाम की विजय की नींव	4
निवेदन - सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत वर्ष 2024: खिलाफ़त अमन-शांति का अभेद्य दुर्ग	6
लेख : इस्लाम के लिए सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाह की सेवाएं	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

لَا أُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ○ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ ○ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ○ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ○ (سورۃ البلد: آیات 2تا5

अनुवाद: सावधान! मैं इस नगर की क़सम खाता हूँ। जबकि तू इस नगर में (एक दिन) उतरने वाला है। और पिता की और जो उसने संतान पैदा की। निस्संदेह हमने मनुष्य को एक लगातार परिश्रम में (लगे रहने के लिए) पैदा किया।

दर्सुल हदीस

عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْزِلُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اِلَى الْاَرْضِ، فَيَتَزَوَّجُ، وَيُوْلَدُ لَهٗ. وَيَمْكُثُ خَمْسًا وَّاَرْبَعِيْنَ ثُمَّ يَمُوْتُ فَيُدْفَنُ مَعِيَ فِيْ قَبْرِيْ فَاَقُوْمُ اَنَا وَعِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ فِيْ قَبْرٍ وَّاحِدٍ بَيْنَ اَبِيْ وَعُمَرَ. (مشکوٰۃ۔ کتاب الفتن۔ باب نزول عیسیٰ ابن مریم)

अनुवाद - हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरो रज़ियल्लाह अन्हों की रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ईसा बिन मरियम ज़मीन पर उतरेगा और वह शादी करेगा और उसकी संतान होगी। वह ज़मीन पर 45 वर्ष रहेगा फिर जब वह वफ़ात पाएगा तो मेरी क़ब्र में दफन होगा। फिर मैं, ईसा बिन मरियम, अबू बक्र और उमर के बीच एक ही क़ब्र से उठेंगे।

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

मुस्लेह मौऊद के बारे में भविष्यवाणी

सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी मौहूद अलैहिस्सलाम ने 20 फरवरी 1886ई० को एक विज्ञापन प्रकाशित किया। जिसमें एक महान भविष्यवाणी का उल्लेख करते हुए आप फ़रमाते हैं:

अल्लाह तआला के इल्हाम और उस महा प्रतापी के द्वारा ज्ञान कराने, दयालु-कृपालु महानतम एवं सर्वश्रेष्ठ ख़ुदा ने जो प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है (महा वैभवशाली और तेजस्वी) मुझको अपने इल्हाम से सम्बोधित करके फ़रमाया कि - मैं तुझे एक रहमत का निशान देता हूं उसी के अनुसार जो तूने मुझ से मांगा। अत: मैंने तेरी तज़र्रुआत (विनती) को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत (दया) से स्वीकार किया और तेरे सफ़र को (जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है) तेरे लिए मुबारक (शुभ) कर दिया। अत: क़ुदरत और रहमत और सानिध्य का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़्ल और इहसान (कृपा एवं उपकार) का निशान तुझे प्रदान किया जाता है और विजय और कामयाबी की कुंजी तुझे मिलती है। हे मुज़फ़्फ़र तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वे जो जीवन के अभिलाषी मौत के पंजे से मुक्ति पाएं और वे जो कब्रो में दबे पड़े हैं बाहर आएं ताकि इस्लाम धर्म की महानता और ख़ुदा के कलाम की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सच्चाई अपनी पूरी बरकतों के साथ आ जाए और झूठ अपने सम्पूर्ण अमंगल के साथ भाग जाए और ताकि लोग समझें कि मैं शक्तिमान हूं जो चाहता हूं करता हूं और ताकि वे विश्वास लाएं कि मैं तेरे साथ हूं और ताकि उन्हें जो ख़ुदा के अस्तित्व पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा तथा ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन्कार और झूठ की दृष्टि से देखते हैं एक खुली निशानी मिले तथा दोषियों का मार्ग प्रकट हो जाए। अत: तुझे ख़ुश ख़बरी हो कि एक रूपवान और पवित्र लड़का तुझे दिया जाएगा। एक पावन ग़ुलाम लड़का तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही नस्ल और सन्तान होगा। सुन्दर पवित्र लड़का तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम **अन्मवाइल** और **बशीर** भी है उसको मुकद्दस रूह दी गई है और वह गुनाह से पवित्र है वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आकाश से आता है, उसके साथ फ़ज़्ल (कृपा) है जो उसके आने के साथ आएगा। वह वैभवशाली, महान और समृद्धशाली होगा। वह संसार में आएगा और अपने मसीही नफ़्स और रूहुल हक़ की बरकत से बहुतों को रोगों से ठीक करेगा। वह ख़ुदा का कलिमा है क्योंकि ख़ुदा की रहमत और स्वाभिमान ने उसे अपने कलिम-ए-तम्जीद (यशोगान) से भेजा है। वह अत्यन्त प्रतिभावान एवं विवेकशील होगा और दिल का सहनशील तथा परंपरागत एवं आन्तरिक विद्याओं (ज्ञानों) से भरा जाएगा और वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके मायने समझ में नहीं आए) सोमवार है, मुबारक सोमवार। प्यारा बेटा, प्रथम और अन्तिम का द्योतक, आदि-अनादि और शाश्वत और श्रवश्रेष्ठ परमेश्वर का प्रतिबिंब, उसका अवतरित होना साक्षात ईश्वर का अवतरित होना है। जिसका अवतरण अत्यंत शुभ और ख़ुदा के प्रताप के प्रकटन का कारण होगा। नूर आता है नूर जिसे ख़ुदा ने अपने प्रेम के इत्र से सुगंधित किया। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे और ख़ुदा का समर्थन उसके साथ होगा, वह जल्द-जल्द बढ़ेगा और कैदियों की आज़ादी का कारण होगा और पृथ्वी के किनारों तक ख्याति पाएगा और क़ौमें उस से बररकत पाएंगी तब वह आसमान की ओर उठाया जाएगा और यह ऐसा सत्य है जो अटल है।

(आइना कमालत-ए-इस्लाम, रूहानी खज़ाइन, खंड 5, पृष्ठ 647) (कश्ती-ए-नूह)

सम्पादकीय

"हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी पश्चिम में इस्लाम की विजय की नींव"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के शासनकाल के दौरान, हज़रत चौधरी फ़तेह मुहम्मद सियाल साहब ने 1913ई० में इंग्लैंड का दौरा किया। लेकिन तबलीग़ की दृष्टि से जमात-ए-अहमदिया के इतिहास में वर्ष 1924ई० एक क्रांतिकारी वर्ष है। क्योंकि उसी वर्ष हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने यूरोप की अपनी पहली यात्रा की। परिणामस्वरूप, जमात-ए-अहमदिया ने एक नए युग में प्रवेश किया।

वेम्बली सम्मेलन में भाग लेने के लिए, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी 12 जुलाई 1924ई० को क़ादियान से रवाना हुए। इस सम्मेलन के लिए, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने "अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम" पुस्तक लिखी। हुज़ूर ने सोचा कि यह लेख लम्बा है और कांफ्रेंस में पढ़ा नहीं जा सकेगा। अत: "सिलसिला अहमदिया" नाम से एक नया लेख तैयार किया गया, जिसका अंग्रेज़ी में अनुवाद "अहमदिया मूवमेंट" के नाम से किया गया और 23 सितंबर, 1924 को सम्मेलन में वही सारांश पढ़ा गया। जिसने जमात-ए-अहमदिया की ख्याति को चार चाँद लगा दिए। इसने यूरोप में इस्लाम की आध्यात्मिक जीत की नींव रख दी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लंदन में भाषण करने की रोया (स्वप्न) बड़ी धूमधाम से पूरी हो गई।

हुज़ूर के लेख का समय शाम 5 बजे तय हुआ था। उस समय पूरा हॉल दर्शकों से भरा हुआ था। किसी अन्य व्याख्यान के दौरान उपस्थित लोगों की संख्या इतनी अधिक नहीं थी। इस सभा के अध्यक्ष सर थियोडोर मॉरिसन ने दर्शकों से हुज़ूर का परिचय कराने के बाद विनम्रता और सम्मानपूर्वक आप से अनुरोध किया कि अपने शब्दों से इस सभा को आनंदित करें। मंच पर खड़े हो कर हुज़ूर ने अंग्रेज़ी में फरमाया :

सभापति महोदय तथा भाइयों और बहनों! सबसे पहले मैं सर्वशक्तिमान ख़ुदा का धन्यवाद करता हूं कि उसने इस सम्मेलन के संस्थापकों के दिलों में यह विचार पैदा किया कि लोगों को धर्म के प्रश्न पर इस तरह से सोचना चाहिए और विभिन्न धर्मों के बारे में भाषण सुनना चाहिए ताकि यह पता चल सके कि उन्हें कौन सा धर्म स्वीकार करना चाहिए। इसके बाद मैं अपने मुरीद चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान साहब बार एट लॉ से अपना निबंध सुनाने के लिए कहता हूं। (तारीख़-ए-अहमदियत, खंड 4 पृष्ठ 452)

इसके बाद चौधरी साहब ने इस लेख को एक घंटे में बहुत ऊंचे, प्रभावी और जोशीले स्वर में पढ़ा। दर्शकों में परमानंद की स्थिति छा गई। अंत तक सभी लोग तल्लीनता की स्थिति में बैठे रहे। जब लेख में इस्लाम के बारे में कुछ ऐसा बताया जाता जो लोगों के लिए नया होता तो कई लोग ख़ुशी से उछल पड़ते। गुलामी, सूदखोरी और बहुविवाह आदि समस्याओं को बहुत स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया था।

जब व्याख्यान समाप्त हुआ तो लोगों ने इतनी गर्मजोशी से और इतनी देर तक तालियाँ बजाईं कि सभापति को अपनी टिप्पणी के लिए कुछ मिनट इंतज़ार करना पड़ा। फिर सभापति ने कहा, "निबंध की उत्कृष्टता और सूक्ष्मता का अंदाज़ा स्वयं निबंध ने करा लिया है।" मैं अपनी ओर से और दर्शकों की ओर से लेख को अच्छे ढंग से व्यवस्थिक करने और अच्छे विचारों का प्रदर्शन करने और उच्च स्तरीय तर्कों के लिए हज़रत खलीफतुल मसीह

का आभारी हूं। दर्शकों के चेहरे यह बता रहे हैं कि वे मेरे इस कथन से सहमत हैं।"

इसी सफर में 19 अक्तूबर 1924ई० को शाम 4 बजे हज़रत मुस्लेह मौऊद ने लंदन में "मस्जिद फ़ज़ल" की बुनियाद रखी। इस मौके पर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया :

"मुझे विश्वास है कि इस मस्जिद के माध्यम से सहिष्णुता की भावना उत्पन्न होगी। इससे दुनिया से उपद्रव और भ्रष्टाचार को दूर करने और शांति और सद्भावना स्थापित करने में बहुत मदद मिलेगी। और वह दिन जल्द ही आएगा जब लोग युद्ध छोड़ देंगे और प्यार से रहेंगे।" (तारीख़-ए-अहमदियत खंड 4: पृष्ठ 457)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस फ़रमाते हैं:

"बड़ी हिकमत और हिम्मत के साथ आपने इस्लाम की खूबियां भी बयान कीं और इस्लाम की दावत दी। "

(खुत्बा जुमा 28 फ़रवरी 2014)

हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें सच्चाई का संदेश देने का अवसर प्रदान करे। आमीन

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO
हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।
P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"
MUSTAFA BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043
तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

वर्ष 2024: खिलाफ़त अमन-शांति का अभेद्य दुर्ग

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने आध्यात्मिक संदेश में खिलाफ़त के संदर्भ में फरमाते हैं: **"एक और महत्वपूर्ण नसीहत खिलाफत के प्रति प्रतिबद्धता है। आपको और आपके परिवार को हमेशा खिलाफत प्रणाली का पालन करना चाहिए। याद रखें कि खिलाफत प्रणाली के धार्मिक विकास के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध है और यह इस्लामी कानून का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। खिलाफत के बिना धार्मिक विकास नहीं हो सकता। खिलाफत के बिना जमात की एकता स्थापित नहीं रह सकती। इसलिए अपना रिश्ता ख़िलाफ़त अहमदिया से जोड़ें और उस हक़ की अदायगी पर ध्यान दें जिसका वादा ख़ुदा ने उन लोगों से किया है जो ख़िलाफ़त का इनाम पाते हैं।"** (सालाना इज्तेमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत 2023 के लिए हुज़ूर का संदेश)

इसी नसीहत पर अमल करने के लिए मज्लिस अंसारुल्लाह भारत साल 2024 को **"खिलाफ़त अफियत का हिसार"**(अर्थात खिलाफत अमन-शांति का अभेद्य दुर्ग) के नाम से मना रही है। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया:

"आप अपने अंसार होने की निशानी यानी ख़िलाफ़त को हमेशा कायम रखो और इस काम को पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रखने की कोशिश करो और यह दो तरीकों से किया जा सकता है। एक तरीक़ा यह है कि अपने बच्चों को अच्छी तालीम दें और उनमें ख़िलाफ़त की मुहब्बत कायम करें। इसीलिए मैंने इत्फ़ालुल अहमदिया संगठन की स्थापना की और ख़ुद्दामुल अहमदिया की स्थापना हुई। ये इत्फ़ाल और ख़ुद्दाम आप लोगों के ही बच्चे हैं। अगर इत्फ़ालुल अहमदिया की तालीम सही होगी तो ख़ुद्दामुल अहमदिया की तालीम सही होगी और अगर ख़ुद्दामुल अहमदिया की तालीम सही होगी तो अंसारुल्लाह की अगली पीढ़ी श्रेष्ठ होगी। मैंने सीढ़ियाँ बना दी हैं। आगे काम करना आपका काम है। पहला कदम

इत्फ़ालुल अहमदिया हैं। दूसरा चरण ख़ुद्दामुल अहमदिया है। तीसरा चरण अंसारुल्लाह है और चौथा चरण सर्वशक्तिमान ख़ुदा है। अंसार का ख़लीफ़ा के साथ एक विशेष संबंध है। इस संबंध में सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी फरमाते हैं: "मुसलमान पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत प्यार करते थे। वह यह सहन नहीं कर सकते थे कि दुश्मन आप पर हमलावर हों। इसलिए वे बेरहमी से हमला करते और काफिरों का मुंह तोड़ देते। उनमें शेर जैसी ताकत होती थी और उन्हें अपनी जान की परवाह नहीं थी।

यह पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए सहाबा का सच्चा प्यार था। आपको भी उनके जैसा प्यार विकसित करना चाहिए। जब तुमने अंसार का नाम कबूल कर लिया है तो उन की तरह मुहब्बत पैदा करो। आपका नाम अल्लाह तआला से संबंधित है और अल्लाह तआला अमर है। इसलिए तुम्हें भी खलीफा के साथ अंसार का नाम हमेशा कायम रखना चाहिए और हमेशा दीन की खिदमत में लगे रहना चाहिए। क्योंकि अगर खिलाफत कायम रहेगी तो उसे अंसार की भी जरूरत पड़ेगी। खुद्दाम की भी ज़रूरत होगी और इत्फ़ाल की भी ज़रूरत होगी। अन्यथा एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।" (सबिलुर रिशाद जिल्द प्रथम पृष्ठ 121)

अल्लाह हमेशा ये ख़िलाफ़त रहे क़ायम
अहमद की जमात में ये नेअमत रहे क़ायम

हम प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह तआला हमें दीन की सेवा के साथ-साथ खिलाफत की स्थिरता के लिए कड़ी मेहनत करते हुए जीवन भर खिलाफत से जुड़े रहने की क्षमता प्रदान करें। आमीन।

(अताउल मुजीब लोन)
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

इस्लाम के लिए सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाह की सेवाएं

शेख मुहम्मद ज़करिया
मुंतज़िम इस्लाह व इरशाद मज्लिस अंसारुल्लाह क़ादियान)

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ ۙ وَلَوۡ کَرِهَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ۔

वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (के प्रत्येक क्षेत्र) पर पूर्ण रूप से विजयी कर दे चाहे मुश्रिक बुरा मनाएँ। (अस-सफ़्फ़ : 10)

प्रिय पाठकों, इसकी व्याख्या करते हुए टिप्पणीकार और पुराने नेक लोग कहते हैं, "यह महदी के आगमन के दौरान है" هٰذَا عِنۡدَ خُرُوۡجِ الۡمَهۡدِیِّ (इब्न जरीर), "और وَذٰلِكَ عِنۡدَ نُزُوۡلِ عِیۡسَی اِبۡنِ مَرۡیَمَ "तफ़सीर जामिउल बयान) यानी यह प्रभुत्व ईसा मसीह और महदी के प्रकट होने के समय में होगा।

इसलिए इस महान उद्देश्य के लिए अल्लाह सर्वशक्तिमान ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आध्यात्मिक पुत्र हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी को मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के रूप में नियुक्त करके इस्लाम धर्म की नींव को फिर से स्थापित किया। और साथ ही अपने वादे और रसूल मकबूल सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आप को इस महान मिशन की सेवाओं को जारी रखने के लिए एक पिसरे मौऊद (वादा किए गए बेटे) की खुशखबरी भी दी। अत: निर्धारित समय पर अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब के रूप में मुस्लेह मौऊद प्रदान किया।

धर्म की सेवा करने का जुनून

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर आप हुज़ूर के सिरहाने पर खड़े हो कर इस्लाम की सेवा करने के लिए बड़े जोश से वचन लिया और फिर आप ने इस वचन को बहुत ही खूबसूरती से निभाया। आप स्वयं फरमाते हैं: इस्लाम की जो भी सेवा हो वह मेरे हाथ से हो।

वो बोझ उठा न सके जिसको आसमान-ओ-ज़मीं
उसे उठाने को आया हूँ क्या अजीब हूँ मैं

आलम-ए-इस्लाम के लिए दुआ

हज़रत मुस्लेह मौऊद भी बचपन से ही इस सुन्नत-ए-नब्वी को आशिक़ाना जज़बे से अपनाने की कोशिश करते थे। और जवानी की उम्र को पहुंचने से भी पहले घंटों तहज्जुद अदा करते थे। तीन-तीन चार-चार घंटे तक और क्रीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस सुन्नत को अधिकतर दृष्टिगत रखते थे कि आपके पांव खड़े खड़े सूज जाते थे। (पत्र हज़रत मुस्लेह मौऊद बनाम साहिबज़ादा मुबारक अहमद साहिब/ बहवाला: यादों के दरीचे)

इसी पत्र में आप ने लिखा है ऐन जवानी के उम्र में अरब के दिलनशीन, दिलरुबा दृश्यों से आनंदित होना आपने गवारा नहीं फ़रमाया बल्कि इस पर यार-ए-महबूब की ज़यारत को प्राथमिकता देकर हज करके आए। जवानी के इबतिदाई ज़माने में ही

आपको कुछ दिन उदास पाकर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वजह पूछी। इस पर आपने बुख़ारी शरीफ़ की इच्छा ज़ाहिर की और फिर आप बिलकुल ऐन जवानी में बुख़ारी की सारी जिल्दों में इस क़दर डूबे रहे कि आपने सिर्फ और सिर्फ बुख़ारी की मदद से ख़िलाफ़त से पहले ही सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अख़बार अलफ़ज़ल में क़िस्त वार मज़ामीन तहरीर फ़रमाते रहे जोकि बाद में पुस्तकीय रूप में भी प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक में 266 पृष्ठ हैं।

मुझे इस बात पर है फ़ख़र महमूद
मेरा माशूक़ महबूब-ए-ख़ुदा है
मुहम्मद मेरे तन में मिस्ल-ए-जां है
ये है मशहूर जां है तो जहां है

यानी बचपन से ही आशिक़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मुस्लेह मौऊद को आलम-ए-इस्लाम की ख़िदमात और इस के रोशन भविष्य के दीदार की एक दिली तमन्ना थी और क़दम क़दम पर इलाही रहनुमाई भी आपको मिलती रही। चुनांचे आप ने आलम-ए-इस्लाम की ख़िदमात चाहे वो दिफ़ाई (रक्षात्मक) हो या तामीरी (रचनात्मक) प्रत्येक रूप से एक प्रशंसनीय अमिट उदाहरण स्थापित की।

इस्लाम जगत के विकास और कल्याण के लिए अपनी हार्दिक इच्छा व्यक्त करते हुए आप फ़रमाते हैं:

"जब सउदी, इराकी, सीरियाई और लेबनानी, तुर्क, मिस्र और यमनवासी सो रहे होते हैं तो मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा होता हूँ और मुझे यकीन है कि वे दुआएं अवश्य स्वीकार होंगी। (रिपोर्ट मज्लिस मुशावरत 1955/स 9)

और इस के लिए दिन रात दुआओं और योजनाओं के साथ-साथ उनको क्रियान्वित भी करते रहें।

इस्लामी एकता के 31 सूत्र

आलम-ए-इस्लाम की रहनुमाई करते हुए 1927 में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक विस्तृत ट्रैक्ट भी प्रकाशित किया। जिसका शीर्षक था "इस्लाम और मुसलमानों के लिए आप क्या कर सकते हैं?" इसमें आपने मुसलमानों के कल्याण के लिए 31 बिंदुओं की एक विस्तृत योजना प्रस्तुत की। इस में विशेष रूप से मुसलमानों को बेरोज़गारी और शिक्षा और सरकारी नौकरियों में भर्ती की ओर ध्यान दिलाया है।

(बहवाला अनवारुल उलूम जिल्द 9 स 532 ता 537)

जलसा सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

एक गुस्ताख़-ए-रसूल तेजपाल की किताब रंगीला रसूल ने भारत का माहौल खराब कर दिया था और इसी बीच एक मुस्लिम युवक ने दिनदहाड़े उनकी हत्या कर दी। और तो और हर तरफ अफरा-तफरी मच गई। इस मौक़ा पर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने मुस्लमानों की रहनुमाई फ़रमाते हुए देश के चप्पे-चप्पे पर सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जलसे आयोजित करने और इस के लिए 1000 वक्ताओं को तैयार करने और साथ ही ग़ैर मुस्लिम विद्वानों से हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ तक़रीर करवाने और उन्हें पुरस्कार देने का प्रस्ताव रखा।

अत: इसी आधार पर सीरतुन्नबी के जलसों की नींव रखी गई और अब इस जलसे का हिंद और पाक उपमहाद्वीप के धार्मिक इतिहास, विशेषकर और सामान्य रूप से दुनिया भर पर गहरा प्रभाव पड़ा है और यह अब एक वैश्विक

आंदोलन का रूप ले रहा है।

ख़िलाफ़त मूवमेंट

प्रथम विश्व युद्ध में तुर्कों ने जर्मनों के साथ मिलकर मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ने का निर्णय लिया। इस युद्ध में जर्मन हार गए, मित्र राष्ट्र जीत गए, फिर तुर्की के तथाकथित खलीफा सुल्तान अब्दुल हमीद को अपदस्थ कर दिया गया। अत: तुर्क मुस्तफ़ा कमाल पाशा सत्ता में आ गए। और उसने नाम मात्र की खिलाफ़त को भी समाप्त कर दिया। इस पर हिंदुस्तान में मुसलमानों ने खिलाफ़त को जारी रखने का आंदोलन चला दिया कि अंग्रेज़ों ने एक मुसलमान खिलाफ़त का समापन किया है इसलिए मुसलमानों को विशेष रूप से हिंदुस्तान के मुसलमानों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध जिहाद करना चाहिए।

इस के लिए हिन्दूस्तान के मुसलमानों को तुर्क से असहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यह आंदोलन वास्तव में उस समय के राजनीतिक दिमाग का आविष्कार था और वो जिन मुल्लाओं को नवाज़ा हुआ था उनके ज़रीया ये तहरीक चलाई गई और फिर ये इतनी शिद्दत पकड़ गई कि सभी बड़े विद्वान और सभी मुस्लिम राजनीतिक नेता इसमें फंस गए। और विद्वानों ने पवित्र कुरान की आयतों का गलत अनुमान लगाकर फतवा दिया कि अब मुसलमानों के लिए केवल एक ही रास्ता बचा है और वह है कि अंग्रेज़ो के साथ रहना पूरी तरह से छोड़ दें और अपनी मातृभूमि छोड़ दें और किसी इस्लामी देश में मुसलमान बन जाएं। फिर वहां से हमला करें और बड़ी शान के साथ वापस आएं और अंग्रेजों को हराकर उन्हें भारत से बाहर निकाल दें। इस महत्वपूर्ण मोड़ पर हज़रत मुस्लेह मौऊद की ही आवाज़ थी जो इस तहरीक के ख़िलाफ़ उठी और जिसने मुस्लमानों की आँखें खोलने की कोशिश की और बड़ी स्पष्टता के साथ बार-बार हालात को जांच परख कर बताया कि ख़िलाफ़त मूवमेंट और सरकार से असहयोग और तुर्क असहयोग आंदोलन हर दृष्टि से ग़लत है। और उसके लिए कुरान की आयतों का उपयोग न करें। इस तरह यह इस्लाम का अपमान है और इस्लाम के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि का घोर अपमान है।

आख़िर में हज़रत अक़दस अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दुआइया कलिमात पर अपने मज़मून को ख़त्म करता हूँ। आप फरमाते हैं :

'' हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की ख़िलाफ़त के वक़्त में जबकि आप की उम्र सिर्फ 20 साल थी, उस वक़्त भी आप के दिल में दीन के लिए और क़ौम के लिए एक दर्द था। अल्लाह तआला हज़ारों हज़ार रहमतें नाज़िल फ़रमाए आपकी रूह पर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन को फैलाने और आपके सच्चे ग़ुलाम और मसीह मौऊद और महदी माहूद के मक़सद को पूरा करने के लिए रात-दिन एक कर के और अपने अहद को पूरा कर के अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हुए और हमें आपकी इस दर्द-भरी दुआ को समझने और करने और अहमदी होने के मक़सद को पूरा करने की अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।''आमीन ।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 15 ता 21 मार्च 2019 पृष्ठ 5 ता 9)

★ ★ ★

17-12-2023 ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के सारथ्य में चेन्नई (तामील नाडु) में सैलाब से प्रभावित लोगों में खाने के पैकेट तक़सीम करने के लिए जाते जुए अंसार।

21-01-2024 को हैदराबाद के निराश्रय बच्चों के साथ खाना खाते हुए श्री ख़ालिद अहमद अल्लादीन साहिब खाईद ईसार व ख़िदमते ख़ल्क़ मजलिस अंसारुल्लाह भारत ऐवम दीगर मेमब्रान।

26-01-2024 को MNJ कैंसर हस्पताल हैदराबाद में मरीज़ों में फ़ल तक़सीम करते हुए श्री अनवर अहमद ग़ोरी साहिब नाज़िम मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला हैदराबाद।

26-01-2024 को MNJ कैंसर हस्पताल हैदराबाद में मरीज़ों में फ़ल तक़सीम करते हुए श्री तनवीर अहमद साहिब नाइब सदर मजलिस अंसारुल्लाह जुनूबी हिन्द।

27-01-2024 को कालेकी (ज़िला अमृतसर) में अराकीन अंसारुल्लाह के साथ मीटिंग का एक दृश्य।

26-01-2024 को गदली (ज़िला अमृतसर) में अराकीन अंसारुल्लाह के साथ मीटिंग के वक़्त एक ग्रुप फ़ोटो।